कम्प्यूटर का प्रयोग
(Application of Computer)

कम्प्यूटर के साथ काम करते हुए छात्रों के समूह को देखने से यह विदित होता है कि छात्र कितनी उत्सुकता एवं उत्साह के साथ कार्यक्रम को करते हैं। कम्प्यूटर के चुनौतीपूर्ण कार्यक्रमों के द्वारा छात्रों के मध्य प्रेरणा पैदा की जाती है। कम्प्यूटर कार्यक्रम के द्वारा सीखने में कभी भी किसी भी प्रकार से नीरस नहीं होता है। कुछ उदाहरणों के द्वारा इसके गुणों को प्रदर्शित किया जा सकता है।

'कोडब्रेकर' एक इस प्रकार का कार्यक्रम है, जिसके द्वारा पूछे गये प्रश्नों का उत्तर दिया जा सकता है। सैद्धान्तिक रूप में प्रश्नोत्तर के क्रम के द्वारा छात्रों को मिल जाता है, जिसके द्वारा छात्रों को सफलतापूर्वक सीखने का अवसर मिल जाता है।

समस्या समाधान की क्रिया के कार्यक्रम को 'येलोरीवर किंगडम' के नाम से जानते हैं। कम्प्यूटर एक विशाल किंगडम को सम्मिलित करता है, जिसमें विभिन्न प्रकार के स्रोत दिये रहते हैं। बिना कम्प्यूटर की सहायता से क्या कोई इस प्रकार की कठिन परिस्थिति को पैदा कर सकता है, जिसके द्वारा कक्षा में अधिगम का कार्य प्रभावित किया जा सके। शिक्षण अधिगम के उद्देश्यों के प्राप्ति के लिए कम्प्यूटर के द्वारा इस प्रकार की परिस्थिति को उत्पन्न किया जा सकता है। इसके द्वारा कठिन परिस्थितियों के द्वारा भी कार्यक्रम को सुगम बनाया जा सकता है।

'वेरीटेक्सट' नामक एक कार्यक्रम है, जिसके द्वारा कार्यक्रम के कुछ रिक्त स्थानों को छात्रों द्वारा पूर्ण कराया जाता है। इन रिक्त स्थानों की पूर्ति के लिए छात्र को चार प्रकार के विकल्प दिये रहते

Scanned with CamScanner

हैं, जिसके द्वारा छात्रों को रिक्त स्थान की पूर्ति करनी होती है। यदि आवश्यक हो तो छात्र कम्प्यूटर के द्वारा सही शब्द का पता भी कर सकता है। कम्प्यूटर ही किसी कार्यक्रम को तैयार करने के लिए निश्चित प्रकार की तकनीकी है। इसके विकल्प के रूप में अभी अन्य किसी प्रकार की तकनीकी का विकास नहीं हो सका है।

इस प्रकार के सैद्धान्तिक कम्प्यूटर के गुणों को एक साथ निम्न प्रकार से दिखा सकते हैं। इसके द्वारा चार क्रियायें की जाती हैं–

(1) अधिगमकर्ता के लिए प्रेरणात्मक है,
(2) अन्तःप्रक्रिया छात्र के लिये उपयोगी है,
(3) कठिन परिस्थितियों का भी अनुसरण करता है, और
(4) तात्कालिक पुनर्बलन भी प्रदान करता है।

इस प्रकार एक शक्तिशाली उपकरण के लिये दूरवर्ती-शिक्षा के क्षेत्र में अनेक प्रकार के प्रयोग हो रहे हैं, जहाँ पर तकनीकी माध्यम मूलभूत आवश्यकता के रूप में प्रयोग में लाया जा सकता है। विश्व में शायद ही ऐसा कोई देश है जहाँ पर कि रेडियो एवं दूरदर्शन की तकनीकी को दूरवर्ती शिक्षा के लिए प्रयोग में लाया जाता हो। भारतवर्ष में भी दूरदर्शन एवं रेडियो कार्यक्रमों को दूरवर्ती शिक्षा के लिए प्रयोग में ला सकते हैं।

इस तकनीकी के विकास के युग में कम्प्यूटर का प्रयोग अधिकांश रूप में दूर नहीं रखा जा सकता है। विश्व के अनेक देशों में कम्प्यूटर का प्रयोग दूरवर्ती शिक्षा संस्थानों में काफी सफलता के साथ प्रयोग में लाया जा रहा है।

दूरवर्ती शिक्षा में कम्प्यूटर के उपयोग की कुछ परिस्थितियाँ निम्नलिखित हैं–

(1) कम्प्यूटर के द्वारा अध्ययन की प्रक्रिया में वैयक्तिक विभिन्नता को ध्यान में रखा जाता है।
(2) दूरवर्ती छात्र के एकांकी स्वभाव को कम करता है।
(3) कम्प्यूटर पर आधारित अध्ययन सामग्री मितव्ययी होती है, जब इसको विशाल स्तर पर तैयार किया जाता है।
(4) कम्प्यूटर के द्वारा छात्र की अध्ययन गति का अनुसरण किया जाता है और उनके द्वारा समस्या का समाधान किया जाता है।

विकसित देशों के द्वारा **माइक्रो-कम्प्यूटर** के उपयोग से दूरवर्ती शिक्षा के क्षेत्र में नई सम्भावनाओं का पता लगाया जाता है। दूरवर्ती-अधिगम में कम्प्यूटर का बहुत ही अधिक महत्व है। इसको शिक्षण के कार्यक्रम में उपयोग, सीखने के यन्त्र आदि के रूप में प्रयोग करते हैं। कम्प्यूटर के विविध उपयोग हैं।

Scanned with CamScanner